जनपद में जल्द होगा सीबीजी प्लांट का निर्माण

रिलायंस, इंडियन आयल और ओएनजीसी लगाएगी संयंत्र, 600 करोड़ की लागत से होगा निर्माण

राजनारायण मिश्र, जागरण,

- प्रत्येक प्लांट से प्रतिदिन 60 टन गैस उत्पादन की क्षमता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिलेगा बढ़ावा
- बढ़ेगा रोजगार, किसानों को मिलेगा लाभ, फसल अवशेषों का होगा सदुपयोग

संतकबीर नगर : जनपद के खलीलाबाद, मेंहदावल और धनघटा तहसीलों में जल्द ही कंप्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी) संयंत्रों की स्थापना शुरू होने जा रही है। शासन से इसकी स्वीकृति मिल चुकी है और अब जमीन आवंटन के बाद कंपनियों को कार्य शुरू करने के निर्देश दिए जा चुके हैं। कुल 600 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले इन तीन संयंत्रों की निगरानी नेडा विभाग करेगा। इस परियोजना से न केवल पर्यावरणीय सुधार होगा, बल्कि रोजगार और किसानों की आमदनी में भी इजाफा होगा।

पूर्व जिलाधिकारी महेन्द्र सिंह तंवर के प्रयासों से वर्ष 2023 में ही इन तीनों तहसीलों में जमीन चिह्नित कर प्रस्ताव शासन को भेजा गया था। अब वर्तमान जिलाधिकारी आलोक कुमार के निर्देशन में कार्य जल्द शुरू कराया जाएगा। खलीलाबाद के परजूडीह में रिलायंस, मेंहदावल के अमरहा में इंडियन आयल और धनघटा के बगही में ओएनजीसी द्वारा संयंत्र स्थापित किए जाएंगे। सीबीजी संयंत्रों की स्थापना से स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण विकास और ऊर्जा उत्पादन जैसे कई लक्ष्यों की पूर्ति एक साथ होगी।

जिला प्रशासन द्वारा जारी की गई सीबीजी प्लांट की प्रतिकात्मक फोटो

तीनों संयंत्रों की प्रमुख जानकारी

तहसील	स्थान	कंपनी	प्रतिदिन उत्पादन क्षमता
खलीलाबाद	परजूडीह	रिलायंस	60 टन
मेंहदावल	अमरहा	इंडियन आयल	60 टन
धनघटा	बगही	ओएनजीसी	60 टन

तीनों तहसीलों में सीबीजी प्लांट के लिए स्वीकृति मिल चुकी है। कंपनियां तय हो गई हैं। नेडा को निर्देश दिए गए हैं कि निर्माण कार्य शीघ्र प्रारंभ कराया जाएगा। यह परियोजना जिले के विकास की दिशा में बड़ा कदम होगी।
आलोक कुमार, जिलाधिकारी

क्या है सीबीजी संयंत्र और इसके फायदे : सीबीजी संयंत्र गोबर, पराली, कृषि अवशेष, किचन वेस्ट आदि से बायोगैस और बायो-सीएनजी बनाता है। इससे बनी गैस का उपयोग खाना पकाने, रोशनी और वाहनों के ईंधन के रूप में किया जा सकता है। इसके साथ ही बचे हुए अवशेष को खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सकेगा। जनपद के गोशालाओं, ग्रामीण घरों व खेतों में ऊर्जा की व्यवस्था में क्रांति आएगी। किसानों को फसल अवशेष और गोबर बेचने से अतिरिक्त आमदनी होगी।

गांवों में आएगी ऊर्जा क्रांति : इस योजना से गोबर धन योजना को भी नई दिशा मिलेगी। ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था मजबूत होगी और बायोगैस से खाना पकाने के साथ रोशनी की भी बेहतर व्यवस्था हो सकेगी। इसके अलावा प्लांट से निकलने वाले अवशेष जैविक खाद के रूप में खेतों में काम आएंगे।